Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

अमृता प्रीतम के विभिन्न रचनाओं में विषयगत विशेषताएँ

Kamini Chugh[1]* Dr. Madhubala Sharma[2]

[1] Research Scholer

[2] Research Supervisor, Sunrise University, Alwar, Rajasthan, India

सांराश - ***भारतभूमि को प्राप्त अनेक सौभाग्यों में से एक यह कहा जा सकता है कि भारत की मातृभाषा हिन्दी है। हिन्दी एक भाषा के साथ-साथ अभिव्यक्ति का एक सरल माध्यम हैं जिसके द्वारा हम अपनी भावनाओं को एक-दूसरे तक पहुँचाने का काम करते हैं। हिन्दी भाषा में सरसता, मधुरता, स्नेहशीलता और सौन्दर्य के साथ-साथ अनेकानेक ऐसी प्रवृतियाँ समाहित है जिसके कारण आज वैश्विक स्तर पर भी इस भाषा का मान है। हिन्दी भाषा की मान, मर्यादा और गरिमा को बढ़ाने में विभिन्न कालखण्डों में विद्वानों, साहित्यकारों, निबन्धकारों, उपन्यासकारों एवं कवियों ने अपना बहुमूल्य योगदान देकर इसकी सुन्दरता में चार चाँद लगाने का काम किया है। ऐसे ही साहित्यकारों में अमृता प्रीतम जी का नाम अग्रगण्य है जिन्होंने वैश्विक स्तर पर हिन्दी साहित्य की सर्वोच्चता को स्थापित किया है।***

संकेत शब्द - ***अमृता प्रीतम, विभिन्न रचनाऐ, साहित्यिक सौंदर्य, विषयगत विशेषता***

----------X----------

भूमिका

अमृता प्रीतम 20 सदीं की एक महान कवियत्री और उपन्यासकार ही नहीं बल्कि एक प्रख्यात निबंधकार भी थी, जिन्होंने पंजाबी कविता एवं साहित्य को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक अलग पहचान दिलवाई है। वे पंजाबी भाषा की सर्वश्रेष्ठ कवियित्री थी, जिनकी रचनाओं का विश्व की कई अलग-अलग भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। 31 अगस्त, 1919 को गुजरांवाला, पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) में जन्मीं अमृता प्रीतम जी ने अपनी रचनाओं में तलाकशुदा महिलाओं की पीड़ा एवं वैवाहिक जीवन के कटु सत्य को बेहद भावनात्मक तरीके से बताया है। पंजाबी साहित्य में 60 साल से भी ज्यादा समय तक राज करने वाली महान कवियित्री अमृता प्रीतम जी की लोकप्रियता भारत में हीं नहीं बल्कि पाकिस्तान में भी है। अपने जीवन में करीब 100 किताबें लिखने वाली महान कवियित्री अमृता प्रीतम जी को उनकी महत्वपूर्ण रचनाओं के लिए कई बड़े पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है।

बहुआयामी प्रतिभा

अमृता प्रीतम बहुआयामी प्रतिभा सम्पन्न आलोच्चय साहित्यकारों ने साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। अमृता जी ने गद्य और पद्य में समान रूप से अतुलनीय सफलता पाई। उनकी रचनाएँ उनके दृढ़ मनोबल, असाधारण परीश्रम तथा अनुशासित कार्य प्रणाली का परिणाम है। समाज की कोई भी समस्या इनकी दृष्टि से छिपी नहीं रही है। इन्होंने समाज में फैली अनेक कुरीतियों का संवेदनात्मक रूप से चित्रण किया है। अमृता प्रीतम ने नारी के व्यक्तिगत संबंधों, दाम्पत्य जीवन में आए अलगाव और बिखराव के साथ जीवन में व्याप्त अकेलेपन और घुटन तथा नारी जीवन की वेदना को विविध पक्षों से जोड़कर प्रस्तुत किया है। अमृता के उपन्यास सम्पूर्णतः नारी केन्द्रित हैं। उन्होंने नारी के एक अलग रूप को चित्रित किया है। अधिकतर नारी पात्र अपनी स्वतंत्रता के प्रति सजक दिखाई देते हैं। इसी सजकता के कारण सामाजिक परम्पराएँ भी उनकी राह में बाधक नहीं बन पातीं और वे कुछ ऐसे निर्णय

www.ignited.in

लेती हैं, जिससे सभी आश्चर्यचकित रह जाते हैं। चेतना, ममता और अनीता इसके उदाहरण हैं। जहाँ चेतना सामाजिक मर्यादाओं और नैतिकता की चिन्ता न करते हुए कुंवारी माँ बनकर अदम्य साहस का परिचय देती है। वहीं ममता के पति को डॉ.देव के संग हुए प्रेम-विवाह और संतान के संबंध में बताकर तथा अनीता का विवाहोपरान्त किसी अन्य पुरूष के प्रति अपने आकर्षण को स्वीकार कर स्वतंत्र रूप से जीवन जीने का निर्णय लेना, इस सत्य को उभारता है कि ये महिलाएँ केवल सर्वाइव (अनुकूलन) नहीं करना चाहतीं, बल्कि अपने जीवन को अपने ढंग से भरपूर जीना चाहती हैं। एक ओर जहाँ अमृता के नारी पात्र स्वच्छन्द प्रेम को मान्यता देते हैं, वहीं साहनी के स्त्री-पात्र उस प्रेम को प्रधानता देते हैं, जिसकी परिणति विवाह है। प्रमिला, कुंतो, थुलथुल, नीलोफर इसके जीवंत उदाहरण हैं, जो केवल पति-प्रेम को जीवन का सर्वस्व मानती हैं।

चिंतनशील साहित्यकार

एक युग चेतना साहित्यकार स्वयं को युगीन समस्याओं से पृथक् नहीं रख सकता। उसकी दृष्टि सम्पूर्ण युग को देखते हुए तदयुगीन विसंगतियों पर तीक्ष्ण प्रहार करती हैं। इसका स्पष्ट और जीवन्त उदाहरण हैं अमृता प्रीतम, जो देशविभाजन जैसे भयावह घटनाक्रम के साक्षी हैं। भारत विभाजन एक मानवीय दुर्घटना है, जो अखण्ड भारत को खण्डित कर लाखों-करोड़ों लोगों का जीवन नष्ट कर गई। समाज में आज भी अपना अस्तित्व बनाए हुए इन कुप्रथाओं को उपन्यासकार ने सफलतापूर्वक अपने उपन्यासों में दर्शाया है। उन्होंने नारी संबंधित विभिन्न समस्याओं तथा नारी की मानसिक पीड़ा का सफल मनोविश्लेषण किया। समाज में पुरूष को दाता तथा स्त्री को भोग्या मात्र समझकर शोषित किया जाता था और नारी भी उस शोषण को चुपचाप सहन कर इस सबसे समझौता कर लेती थी, वहीं आधुनिक नारी समाज के इस व्यवहार से समझौता नहीं करती। वह चाहे शिक्षित हो या अशिक्षित अत्याचार, घुटन, अपमानित जीवन को स्वीकार नहीं करती, बल्कि उसका विरोध करती है। आज की नारी स्वयं को पुरुष से कम नहीं मानती। अपनी क्षमता के बल पर स्त्री समाज के हर क्षेत्र में प्रवेश कर चुकी है। इसका उदाहरण हैं श्रीमति इंदिरा गांधी, सरोजिनी नायडू, किरण वेदी, वचंदरीपाल, कल्पना चावला, पी.टी. ऊषा, सायना नेहवाल, सानिया मिर्जा, मैरी कॉम, पी.वी.संधु, लता मंगेशकर, साक्षी, प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, निकी हेली आदि इन विशिष्ट महिलाओं ने अपने कार्य क्षेत्र में एक विशिष्ट कार्य संस्कृत्ति का निर्माण किया जिसने भारत के सामाजिक एवं राजनीतिक आधुनिकीकरण का मार्ग प्रशस्त किया।

अमृता की संवेदनशील रचनाधर्मिता लोकप्रियता ने सभी आलोचकों का मुँह खुद ही बंद कर दिया था। अमृता को पढ़ते हुए खुद को बारहा संभालना पड़ता है, दिल के रेशे-रेशे को सहेजना पड़ता है, क्योंकि पाठक को खुद नहीं मालूम होता है कि जाने कब आँसुओं का सैलाब वो सब कुछ बहा ले जाए जो सिर्फ और सिर्फ आपका है। समाज का दोमुँहापन किस प्रकार व्यक्ति को तोड़ता है, पुंसवादी सोच किस प्रकार स्त्री को समाज के चैराहे पर बैठा देती है यह सत्य पूरी तसल्ली से अमृता अपनी रचनाओं में बयां करती है। प्रेम के सबसे नरम अहसासों को जीती स्त्री किस प्रकार छली जाती है, किस तरह वह जीवन के घात-प्रतिघातों और उतार-चढ़ावों को जीती है, इन सभी घटनाक्रमों को अमृता की रचनाएँ जीवंत रूप में अभिव्यक्त करती है, उतनी ही सच्चाई और प्रामाणिकता के साथ कि मानो वह स्वयं इन सबकी प्रत्यक्षदर्शी रही हो। अमृता साहित्य और आम रचना का फर्क बखूबी जानती थी, इसीलिए उसने कोरी भावुकता को वक्ती आँधियाँ कहा, जो साहित्य का कभी भला नहीं कर सकती। सीमोन की ही तरह अमृता स्त्री का दर्द और त्रासदी सब कुछ समझती है। बकौल प्रभा खेतान- "लेखक की निर्मित दुनिया स्वयं उस लेखक को आत्मसात कर सके इसलिए अपनी चेतना पर आरोपित सभी परतों को छीलते हुए चलने पड़ता है, किंतु अत्यधिक आत्मसात् करने के पश्चात् भी हमारा तादात्म्य और एकीकरण प्रामाणिक नहीं हो पाता, भेद बना रहता है। स्व की सीमा का अतिक्रमण भी वही कर सकता है जो अपने सीमित दायरे के भीतर की दुनिया को पहचाने। नहीं तो सारा पाठकीय अनुभव आरोपित, किसी और के मानस का छीना हुआ टुकड़ा लगता है।" (स्त्री उपेक्षिता पुस्तक के आमुख में प्रभा खेतान के विचार) अमृता के लेखन से गुजरते हुए हम चाहे बात पिंजर की करें या नागमणि, यात्री, तेरहवाँ दिन और उनचास दिन की वहाँ चित्रित सभी पात्र चाय के एक पौधे की मानिंद उगे हुए नजर आते हैं और हर लड़की उस पौधे की सबसे ऊपर की कोंपल की भाँति जो डेढ़ और ढाई के क्रम में लगी होती है,... सबसे छोटी, सबसे हरी और चमकदार पर सबसे ताजा और जायकेदार। हर किरदार वहाँ अपने को खोजता हुआ फिर-फिर बुनता हुआ नजर आता है। इस तरह अमृता को पढ़ते-पढ़ते बार-बार रूमी याद आते हैं कि- "तुम समन्दर की एक बूँद नहीं, अपने आप में एक बूँद में पूरा समन्दर हो...." अमृता की लिखी सौ से अधिक पुस्तकें हैं परन्तु अभी पिंजर, रसीदी टिकट, यह सच है, एक थी सारा और खतों का सफरनामा ही ठीक से पढ़ पायी हूँ। बहुत कुछ पढ़ा जाना बाकी है पर बात यह भी है कि एक ही रचना को जाने कितनी-कितनी बार पढ़ा जाए तब कहीं जाकर वह पूरे होश में ठीक-ठाक जेहन में बैठ पाती है। इसके बावजूद बहुत कुछ अनपढ़ा

भी छूट जाता है। पहली दूसरी दफा तो पाठक पर लफ्जों और संवेगों का तुफान ही जारी रहता है। उनका प्रसिद्ध उपन्यास पिंजर, जिस पर फिल्म भी बन चुकी है.. विभाजन और हिन्दू मुसलमान कौम के कट्टरपन पर हावी एक स्त्री की जिद और उसके यातनापूर्ण जीवन की दास्तां है। यह ऐतिहासिक दास्तान अभिव्यक्त होकर इतिहास की वेदना और चेतना बन जाया करती है। यहाँ लेखिका पूरो और रशीद के रिश्ते की कशमकश में स्त्री मन के उन अनछुए पक्षों को उकेरने की कोशिश करती है जो हर स्त्री के अपने हैं। स्व से ऊपर उठकर अंततः पूरो की ही तरह उनका हर औपन्यासिक पात्र चेतनावान हो उठता है। यही कारण है कि पूरो अपना जबरन उठाए जाने का, धर्म परिवर्तन का और सपनों के कुचले जाने का दर्द भूलकर हर उस लड़की की मदद करती है जो उस की ही तरह सतायी जा रही है। वह कहती है, "कोई भी लड़की हिन्दू हो या मुसलमान, जो भी लड़की लौटकर अपने ठिकाने पहुँचती है, समझो उसी के साथ मेरी आत्मा भी ठिकाने पहुँच गई।" (पिंजर उपन्यास-अमृता प्रीतम) पिंजर इंसान के एक बेहतर इंसान बनने की कल्पना है। यहाँ नायिका पूरी परिपक्व है, गंभीर है और वैचारिक है। यही वैचारिकता उसे व्यष्टि से समष्टि स्तर तक ले जाती है।

अमृता ने प्रेम को जिया था। उसने प्रेम को गिरते हुए नहीं वरन् संभलते और संभालते हुए देखा था। यही कारण है कि अमृता-साहिर-इमरोज के उदात्त प्रेम और विश्वास की महक उनकी कई रचनाओं में बिखरी मिलती है। यह प्रेम कभी सरहदों पार पहुँचकर देश, काल और परिवेश से परे हो जाता है तो कभी दिल के सबसे भीतरी कोने में छिपकर बैठा गमकता रहता है, ठीक रातरानी की तरह। यूँ हर प्रेम एक कविता के ही समान होता है जहाँ कुछ अक्षर सुनहरे रंग के हो जाते हैं तो कुछ विरह की आग में तपकर सुर्ख परन्तु उनकी हरियाली ताउम्र कायम रहती है। पिंजर में रशीद और पूरो का प्रसंग हो या उसके मंगेतर रामचंद का प्रसंग, प्रेम की यह खेती वहाँ भी हरी ही रहती है। अमृता की खासियत यही है कि यहाँ बातें बेहद सादा लफ्जों में निकलती हैं और दिल को छू जाती है। औरत की सादगी और पाकीजगी को समाज ने कभी स्त्री मन की नजर से देखने की कोशिश नहीं की वरन् वह उसे तन के फ्रेम में कसने की कोशिश करता है। इसी दर्द को लेकर उनके उपन्यास एरियल की पात्र ऐनी कहती है,- "मुहब्बत और वफा ऐसी चीजें नहीं है जो किसी बेगाना बदन के छूते ही खत्म हो जाएं , हो सकता है- पराए बदन से गुजरकर वह और मजबूत हो जाए जिस तरह इंसान मुश्किलों से गुजरकर और मजबूत हो जाता है। " प्रेम और रिश्तों पर इतनी खूबसूरती से सिर्फ और सिर्फ अमृता ही लिख सकती थी। उनके गद्य में जाने कितनी अधूरी कविताओं के टुकड़े पड़े हैं जिन्हें पढ़ते हुए, देखते हुए दिल जाने कितनी बार छलनी हो उठता है।

अमृता की 'दो खिड़कियाँ' कहानी जीवन के उन अर्थों के नाम है जो पेड़ों की शाखों पर पत्तों की मानिंद उगते हैं और खो जाते हैं। एक स्त्री का उसके परिवेश से आत्मीय लगाव होता है। यहाँ विस्थापन की वेदना है और ताउम्र उन चीजों की वापसी का इंतजार है जो लोप हो गयी हैं। यह कहानी एक स्त्री के रिक्त जीवन और अकेलेपन का एकालाप है।

एक थी अनिता, रंग दा पत्ता और दिल्ली की गलियां उनके वे उपन्यास है जहाँ स्त्री चेतना का निरन्तर विकास और प्रेम के चैतन्य सोपान दिखाई देते हैं। एक थी अनिता की नायिका अनिता उस राह पर चलती है जहाँ कोई रास्ता नजर नहीं आता परन्तु कुछ है जो उसे निरन्तर बुलाता है। रंग दा पत्ता में प्रेम की रवानगी है। इस उपन्यास की स्थापना है कि मुहब्बत से बड़ा जादू इस दुनिया में कोई नहीं है। ऐसा नहीं है कि अमृता सिर्फ और सिर्फ प्रेम और स्त्री मन की ही बात करती है समाज, मजहब और सियासत पर भी वे बैलौंस लिखती है। उनके 'यह सच है' उपन्यास में गढ़ा गया बेनाम किरदार इंसान के चिंतन का ही प्रतीक है। वह अपने वर्तमान को पहचानने की कोशिश में हजारों साल पीछे जाकर इतिहास की कितनी ही घटनाओं में खुद को पहचानने का प्रयत्न करता है। महाभारत के प्रसंगों के माध्यम से इतिहास को वर्तमान में जोड़ने की कोशिश यहाँ साफ झलकती हुई दिखाई पड़ती है। उपन्यास की किरदार पानी पीने के लिए ग्लास उठाती है तो उसे लगता है कि उसने युधिष्ठिर की सदियों पहले दी गई आज्ञा से ही उसने जल का स्रोत खोजा है और मानो उसके लिए भी वहाँ से वैसी ही एक आवाज गूँजती है जो कभी नकुल के लिए गूँजी थी कि मेरे प्रश्नों का उत्तर दिए बिना इस ग्लास का पानी नहीं पीना और इतिहास और वर्तमान के बीच झूलते हुए वह किरदार फिर यह सोचने लग जाता है कि वह सदियों से अभिशप्त नकुल ही तो है, जो कभी वक्त के सबसे जरूरी सवालों का जवाब नहीं दे पाया और जिसे मूर्छित होने का शाप लगा हुआ है। कभी यह किरदार जुए में हारा हुआ युधिष्ठिर बन बैठता है तो कभी द्रोपदी बन सवाल करता है कि युधिष्ठिर जब तुम अपने आपको ही हार चुके थे तो फिर मुझे दाव पर लगाने का तुम्हें क्या अधिकार था। अमृता लिखती है कि इस सवाल के माध्यम से मैं समाज को बताना चाहती हूँ कि,- जब इंसान अपने आपको दाव पर लगा चुका है, हार चुका है तो समाज के नाम पर दूसरे इंसानों को मजहब के नाम पर खुदा की मखलूक को और रियासत के नाम पर अपने-अपने देश के वर्तमान भविष्य को दाव पर लगाने का उसे क्या अधिकार है? इतिहास और वर्तमान के बीच ऐसी ही कशमकश हमें

कमलेश्वर के उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' में भी दिखाई देती है।

वस्तुतः उनका समूचा लेखन इंसान क्या है और इंसान क्या हो सकता है के फासले को जेहनी तौर पर तय करने का हौंसला दिखाता है। इस सफर में जाने कितने तिकोन पत्थर उनके हलफ से उतरे हैं। कितने भविष्य हैं जो उसने वर्तमान से बचाएं हैं और शायद कितने वर्तमान जिनको वर्तमान से भी बचाया है, की जद्दोजहद साफ दिखाई देती है। यह बचाव बेहद जरूरी है क्योंकि यहाँ हर चेहरे पर नकाब है और यहाँ हर जन्मपत्री आदमी की जन्म की एक झूठी गवाही देती है। अमृता के लेखन में जाने कितनी बेरंग चिट्ठियां है, हिज्र का रूहानी रंग है और हर हर्फ इस तरह प्रयुक्त हुआ है मानो अपना सबसे अलग प्रभाव छोड़ रहा हो। वहाँ गूढ़ दार्शनिकता के बजाय नीम उदासियाँ हैं जो भावों के पैराहन ओढ़ कर आती हैं। पाकिस्तान की शायरा सारा शगुफ्ता की जिदगी और शायरी के बारे में लिखती हुई वह कब खुद शगुफ्ता बन बैठती है पता ही नहीं चल पाता। सारा का जीवन यातनाओं का चरम है। उस जीवन में बस दीवारें हैं, गुजरता हुआ वक्त है और आँखों में बेमाप समुन्दर। सारा की नज्में जलते हुए हर्फ है जिन्हें पढ़ते हुए दिल पर फफोले उभर आते हैं और आँख में पानी। इन शब्दों को पढ़ते हुए संवेदनाओं की उठापठक आपको कई देर मौन के गहरे गह्वर में धकेल सकती है। वह पल-पल समाज, शौहर और परिवार द्वारा दी गयी यातनाएँ भोगती हुई कहती है कि, मैं अपने रब का खयाल हूँ... और मरी हुई हूँ... मेरे जीवन की रात में दाग सिर्फ चाँद का है। अमृता सारा की फिर से जीने की ख्वाहिश को स्याह (शाब्दिक) ताकतों के जरिए आबाद करती हुई, मन्नतों के इतिहास में एक पाक मन्नत दर्ज करती है, जो इंसान को सिर्फ इंसान देखने की आकांक्षी है। उसकी नजर में 'सारा' स्वयं एक दुआ है पर अपने हाथों से गिरी हुई नहीं, वह इंसान के हाथों से गिरी हुई दुआ थी। वो कहती है सारा एक दुआ थी और दुआएँ हमेशा सलामत रहती हैं.. कभी रूठती नहीं..मरती नहीं.... वाकई ! इतना खूबसूरत तो कोई खुदा जैसा दोस्त ही लिख सकता है। अमृता की लिखी यह किताब हर्फ दर हर्फ सांसों का उतार-चढ़ाव है। सारा अमृता के लिए खास है और इसी कारण उसका दर्द भी उसका अपना है। उस तारे की टूटन को वह अपने भीतर महसूस करती है। लोग कहते हैं तो सच ही कहते होंगे कि उन्होंने कई बार टूटे हुए तारे कि गर्म राख जमीन पर गिरते देखी है....मैंने भी उस तारे की गर्म राख अपने आँगन में बरसती हुई देखी है...जिस तरह और तारों के नाम होते हैं, उस तरह जो तारा मैंने टूटते देखा, उसका भी एक नाम था- सारा शगुफ्ता... (एक थी सारा-अमृता प्रीतम)। सारा की नज्म कागज से उतरकर जिस्म पर कुछ यूँ सुलगती है....और अमृता खुदा से मिलकर सिसकते हुए उसे सलाम कहती है...

अमृता प्रीतम के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ की बात है, अमृता जी ने अपने आस-पास की जिन्दगी को अपनी कलम से जीवंत रूप में उभारा है। जीवन की विभिन्न विसंगतियों, स्त्री जीवन से जुड़े मसलों जैसे विवाह से संबंधित, दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, स्त्री का यौन शोषण, बलात्कार, धार्मिक समस्याओं, देश विभाजन से उत्पन्न गंभीर विस्थापन, अपने प्रियजनों से बिछुड़ने का दुःख, अंधविश्वास, साम्प्रदायिकता, आर्थिक समस्याओं में बेरोजगारी, गरीबी, सामाजिक रुढ़ियों, टूटते-बिखरते रिश्ते, देश की जर्जर राजनैतिक-आर्थिक-सामाजिक परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण किया है। इस यथार्थ चित्रण में अमृता जी अपने आस-पास के कई पात्रों, व्यक्तियों को न केवल चुनती हैं बल्कि कल्पना के द्वारा उनको निखारती भी हैं। सुभाष नागपाल से बातचीत करते हुए अमृता जी यथार्थ और कल्पना के संबंध को बताती हैं। सुभाष -आपके बहुत से पात्र काल्पनिक लगते हैं। यथार्थ जगत से दूर...।

अमृता प्रीतम ने अपने उपन्यासों की रचना इन्हीं यथार्थ और कल्पना के मिले-जुले क्षणों में की हैं। कहीं उनका पात्र कल्पना में होते हुए भी सामाजिक यथार्थ को साकार कर जाता है तो कहीं साकार पात्र काल्पनिक हो जाता है। जैसे नीना उर्फ शोसला उपन्यास की नायिका पूर्णतः काल्पनिक है लेकिन अमृता प्रीतम के लिए साकार हो जाती है -"नीना मेरे नाविल घोसला की मुख्य किरदार थी। मैंने उसे निरी कल्पना से लिखा था। पर यह कमबख्न मेरे लिए भी इतनी साकार हो गयी कि एक रात सपने में मुझे उलाहना देने लगी कि तुमने मेरी जिन्दगी को दुखांत में क्यों बदल दिया? मैं जीना चाहती थी...। अमृता प्रीतम सच्चाई को मानसिक विकास और जीवन के परिस्थितियों के अनुरूप स्वीकार करती हैं। वे लिखती हैं -"सिर्फ सच की परिभाषा अपने-अपने मानसिक विकास के अनुसार होती है...। उनके इस कथन को हम उनके एक उपन्यास यात्री के संबंध में अक्षरशः सटीक पाते हैं। 'यात्री उपन्यास का नायक अमृता जी ने अपने जीवन से जुड़े एक पात्र से लिया था। जब वह छोटा बच्चा था। अमृता जी ने अपनी कल्पना से उस पात्र से जुड़े यथार्थ को नये आयाम देने का प्रयत्न किया लेकिन उन्होंने अपनी कल्पना में इस पात्र का जो विकास किया वह असलियत में नहीं घटा। वे कहती हैं -"यात्री नाविल का किरदार मैंने जिन्दगी से लिया था। जब वह बहुत छोटा बच्चा था, उसे तब देखा था। उसके जवान होते मन की मैंने कल्पना की थी, लेकिन उसे उस उम्र में देखा नहीं था। नाविल छपे कुछ साल हो गए थे, जब संयोग से उससे मुलाकात हो गयी। हिन्दीत्तर भारतीय भाषा साहित्यकारों में अमृता प्रीतम एक विशिष्ट साहित्यकार हैं। उन्होंने अपने रचनाकर्म से सम्पूर्ण भारतीय साहित्य को न केवल प्रभावित किया बल्कि उसे नई दिशा तथा सोच प्रदान की है। उन्होंने

अपने समय का ही नहीं बल्कि आने वाले भविष्य की चिंता करते हुए पूरे विश्व के मानव जाति के संघर्षपूर्ण स्थितियों का चित्रण किया। उनका उपन्यास साहित्य हमारे समाज के महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को सामने लाता है। उनका उपन्यास संत्रास, कुंठा, तनाव, मृत्युबोध, अजनबीयत, अमानवीयता आदि से जूझते मानव में आशा की किरण पैदा करता है।

अमृता प्रीतम के उपन्यास लेखन का समय लगभग सन् 1948 ई. से सन् 1989 ई. तक है। उनके लेखन पर मूलतः अपने परिवेश की दो घटनाओं का प्रभाव लक्षित किया जाता है। पहला देश का विभाजन और दूसरा उनका अकेलापन। सुभाष नागपाल से बातचीत के दौरान अमृता प्रीतम अपने लेखन में अकेलेपन और विभाजन के प्रभाव को स्वीकार करती हैं सुभाष नागपाल - जब आपने लिखना शुरु किया, तब कौन-सी जरुरत आपको लिखने के लिए सबसे अधिक आंदोलित करती थी? अमृता - अकेलापन। उसके बाद एक बहुत हद तक जिसने आंदोलित किया वो थी मुल्क की तकसीम। जिससे हमारी कद्र और कीमतें एकदम जड़ से हिल गईं। हम मजहब को क्या सोचते थे और ये क्या निकला ... तो उसके पीछे जो हाथ होते हैं सियासत को उन तक जाना होता है। जो किसी हद तक मासूम होते हैं उनको भी उस रास्ते पर डाल देते हैं। ये मजहब का रोल ऐसा क्यों होता है? अमृता प्रीतम विभाजन का प्रमुख कारण धर्म नहीं स्वीकार करती बल्कि सियासत के कुछ मौकापरस्त लोगों द्वारा उसकी गलत व्याख्या को बताती हैं। उन्होंने धर्म और मजहब को दो अलग-अलग चीजें मानकर उसके बीच के अंतर को रेखांकित किया है। उपरोक्त बातचीत में वे आगे कहती हैं -"अभी हाल ही में आल इंडिया रेडियो में धर्मनिरपेक्षता पर एक सीरीज शुरु हुई थी। उसमें मैंने कहा कि धर्म में तो पक्षपात होता ही नहीं तो ये निरपेक्षता का सवाल ही गलत है। निरपेक्षता तो तभी होगी जब पक्षपात होगा। धर्म में जो बात होती है वह मजहब मंय नहीं। धर्म तो मन की अवस्था है, मजहब एक बाहर की ओढ़ी हुई चीज होती है। मजहब तो हरेक का अलग-अलग हो सकता है, पर धर्म तो सबका एक है। अमृता प्रीतम ने बहुत-ही खूबसूरती से धर्म और मजहब के बीच धर्म जो कि इंसानियत का प्रतीक है उसे अपने जीवन और अपने पात्रों को गढ़ा है। ना राधा ना रुकमणी का हर कृष्ण के द्वारा अमृता प्रीतम ने मजहब की कट्टरता, सामाजिक परम्परा, राजनीतिक चालों की पोल खोली हैं, जिसके द्वारा कितने ही मासूम लोगों की बलि दी गयी। हरकृष्ण कहता है -"समाज के यज्ञ में समाज वाले न जाने अपने-अपने मजहब की कट्टरता के, सामाजिक परम्परा के, और राजनीतिक चालों के कैसे मंत्र पढ़ते हैं कि उस यज्ञ में हर इंसान की बलि दे देते हैं उसे देश विभाजन का समय याद आया -कितने हजारों लोग थे, बेगुनाह लड़कियाँ जिन्हें सियासत के मंत्रों ने बलि दे दिया और हर मजहब के मंत्रों ने सीधे-सादे घर बार वाले लोगों के हाथों में खूनी तलवार पकड़ा दी ...।

पाँच महिला लेखकों की तुलनात्मक विवरण:- आत्मकथा का लेखन जागरूक है और महिला लेखकों के लिए काम जारी रखता है। महिला मानस के अनुरूप विरोधाभासी सामान्य स्थितियाँ इतनी अच्छी तरह से हैं कि स्त्री की आत्मा के साथ एक अलग रिश्तेदारी है। एक तरफ ऑटो जीवनीकार को अपने निजी शेड्स में सच्चाई का दोहन करके खुद को उजागर करना है, दूसरी तरफ, उसे खुद को सही ठहराने और प्रस्तुत करने के लिए खुद को प्रस्तुत करना होगा। गोपनीयता की बलि आत्मकथा की केंद्रीय मांग है और यह स्त्री संस्कृति के विरोध में प्रतीत होती है। बहुत कम महिला लेखक इस आयाम के साथ आगे आई हैं। पाँच महिला लेखकों के इस तुलनात्मक अध्ययन से उनके काल, पर्यावरण, भाषा विज्ञान और उनके धार्मिक उत्साह का विवरण प्रतुत होता है।

अमृता प्रीतम

अमृता प्रीतम को पंजाबी साहित्य का पहला प्रसिद्ध कवि, निबंधकार और उपन्यासकार माना जाता है। अमृता पंजाबी साहित्य की पहली प्रमुख कवयित्री थीं जो वर्ष 1947 में भारत पाकिस्तान विभाजन के बाद लाहौर से भारत आ गई थीं। उन्हें अपनी मार्मिक कविता, अज्ज से सबसे ज्यादा याद किया जाता है। 18 वीं सदी के पंजाबी कवि, भारत के विभाजन के दौरान नरसंहार को लेकर उनकी पीड़ा की अभिव्यक्ति के लिए एक वारिस शाह शाह (आज मैं वारिश शाह को आमंत्रित करता हूं)। एक उपन्यासकार के रूप में, उन्होंने एक उपन्यास की रचना किया था जिसका नाम पिंजर (1950) था। जिसमें उन्होंने अपने यादगार चरित्र, शुद्ध, और महिलाओं के खिलाफ हिंसा का एक प्रतीक को अपनी लेखनी का विषय बनाया है। इस उपन्यास को 2003 में एक फिल्म के रूप में पुरस्कार प्राप्त हुआ था।वह पंजाबी साहित्य में सबसे महत्वपूर्ण शख्सियत के रूप में जानी जाने वाली पहली महिला थी। वह अपनी कविता सुनेह (संदेश) के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार जीतने वाली पहली महिला बनीं, बाद में उन्हें भारत का सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार भारतीय ज्ञानपीठ मिला। उन्हें 1969 में पद्मश्री से और आखिरकार 2004 में भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। 1982 में कागज ते कैनवास के लिये (कागज और कैनवस) 2004 में उन्हें भारत के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार, साहित्य अकादमी, साहित्य अकादमी

फेलोशिप से सम्मानित किया गया। साथ ही उन्हें साहित्स सेवा के लिये लाइफ टाइम उपलब्धियों से नवाजा गया।

कमला दास

कमला दास समकालीन भारतीय अंग्रेजी साहित्य की सबसे बड़ी महिला कवि ही। एक विश्वासपात्र कवयित्री के रूप में, वह अपनी कविताओं में नारीवादी लोकाचार को प्रदर्शित करती है। कमला दास, 1934 में केरल में पैदा हुईं, एक द्विभाषी लेखिका हैं, वह मलयालम में अपनी मां लाउंज में छद्म नाम माधवी कुट्टी लिखती हैं। वह कई पुरस्कारों और पुरस्कारों की प्राप्तकर्ता हैं, एशियाई काव्य पुरस्कार, कथा साहित्य के लिए केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार, साहित्य के लिए एशियाई विश्व पुरस्कार, केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार, आदि। वह साथ नोबेल पुरस्कार के लिए अल्प-सूचीबद्ध थीं, डोरिस लीजिंग और नादिन गार्डिनर। उनकी काव्य कृतियों में शामिल हैं, समर इन कलकत्ता (1965), द डिसेंडेंट्स (1967), द ओल्ड प्लेहाउस और अन्य कविताएँ (1973), कलेक्टेड पोयम्स (1984), द बेस्ट ऑफ कमला दास (1991) और ओनली द सोल को पता है कि कैसे गाना है। जैसे वह अंदर लिखती है मेरी कहानी "कवि अपनी मृत्यु से कई बार मरते हैं। वे विशेष रूप से बार-बार मृत्युलेखों में मर जाते हैं। वे फिर से रहते हैं, इसलिए वे नहीं जब उनकी मौत के बाद उनकी कविताएं छपी हैं. कमला दास अपने मूल नाम के रूप में माधवी कुट्टी अपने शुरुआती दिनों में केरल के नलपत घर मालाबार में थीं। वह एक इकोनॉस्टल हैं, जिन्होंने अपनी ईमानदार और स्पष्ट काव्य पंक्तियों द्वारा भारतीय अंग्रेजी कविता की दृढ़ता पर अपनी पहचान का दावा किया है जो भारतीय पारंपरिक समाज में मानव-संबंध के पाखंडी लिबास को तोड़ती है। वह एक भारतीय अंग्रेजी कवि, लघु कथाकार, उपन्यासकार, नाटककार, निबंधकार, गैर-कथा लेखक और बच्चों की लेखिका हैं... उनकी कविता तोरु दत्त और सरोजिनी नायडू जैसी तत्कालीन महिला भारतीय कवियों से एक गंभीर विराम है, लेकिन एक स्व-प्रेम, निराशा, पीड़ा, असफलता और घृणा के पारंपरिक तरीके के खिलाफ लिंगानुपात के सार्वभौमिक अनुभव का उत्सव एक स्त्री भारतीय जागरूकता के माध्यम से पकड़ा गया। कमला दास को भारतीय मोनरो कहा जा सकता है, जिस तरह मर्लिन मुनरो को हॉलीवुड में सेक्स की देवी के रूप में जाना जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि कमला दास की रचनाओं का शीर्षक है और इसका झुकाव मोहक रूप से है कि वह अपनी कविता, परिचय 'में पाए गए एक्सोटिका की हवा के साथ पठन सार्वजनिक कैसे करती है।

लक्ष्मीबाई तिलक

लक्ष्मीबाई तिलक का जन्म अपने समय के ज्ञाता मराठी कवि नारायण वामन तिलक के रूढ़िवादी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। लक्ष्मीबाई तिलक की स्मृति चित्र' भी मूल रूप से मराठी में लिखी गई थी और बाद में जोसेफाइन द्वारा अंग्रेजी में अनुवाद किए जाने परंदक आई फॉलो के बाद' और लुई मेनेजेस ने मज स्केच ऑफ मेमोरी' के रूप में लिखा, लक्ष्मीबाई ने अपने संस्मरण की शुरुआत में स्वीकार किया कि मैं स्वभाव से और यद्यपि आत्मा से बहुत ऊर्जावान हूँ। बाद में अपनी आत्मकथा में एक बार फिर वह स्वीकार करती हैं, "मैं बार-बार उछलती हुई रबर की गेंद की तरह हूँ। संस्मरण से लक्ष्मीबाई (1969-1936) के जीवन का पता चलता है और वे अनपढ़ चिटपवन ब्राह्मण की बेटी अशिक्षित प्रैंकस्टर मनु गोखले की बेटी को बदल देती हैं।

उर्मिला पवार

उर्मिला पवार साहित्यिक व्यक्तित्व हैं, जिन्हें मराठी साहित्य में लघु कथा लेखन के लिए जाना जाता है। वह महाराष्ट्र राज्य के कोकण क्षेत्र में जन्मी और पली-बढ़ी है। उनका जन्म वर्ष 1945 में रत्नागिरी जिले के अडगाँव गाँव में हुआ था। आज, वह एक नारीवादी लेखिका और महिलाओं के हित आंदोलन की नेता के रूप में जानी जाती हैं। एक दलित लेखक के रूप में, उन्होंने खुद को दया पवार, बेबी कांबले और शांताबाई गोखले के बाद दलित साहित्य की प्रमुख आवाज के रूप में स्थापित किया। उनका संस्मरण आयदान, जो वर्ष 2003 में प्रकाशित हुआ था और जिसका अनुवाद डॉ माया पंडित ने माई लाइफरू ए दलित महिला संस्मरण 'के रूप में किया था। आयदान का मतलब है गन्ने की टोकरी बुनना। यह महाआर समुदाय की मुख्य आर्थिक गतिविधि थी, अयदान शब्द का एक और अर्थ हैय यह उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले बर्तन हैं। महार समुदाय गाँव के मध्य स्थान में रह रहा था, क्योंकि वे उच्च जाति के लोगों के लिए उनके स्वच्छता संबंधी कार्यों के साथ-साथ बाहरी लोगों के हमलों से बचाने के लिए उपयोगी हो सकते हैं।

शोभा डे

7 जनवरी 1948 को जन्मी शोभा डे एक भारतीय स्तंभकार और उपन्यासकार हैं जिन्हें अक्सर भारत का जैकी कॉलिन्स कहा जाता है। शोभा राज्याक्ष एक महाराष्ट्रीयन सारस्वत ब्राह्मण परिवार से है। उसने मनोविज्ञान में डिग्री के साथ सेंट जेवियर्स कॉलेज, मुंबई से स्नातक किया। मॉडल के रूप में अपना नाम बनाने के बाद, उन्होंने 1970 में पत्रकारिता में

अपना करियर शुरू किया। उसी दौरान, उन्होंने तीन लोकप्रिय पत्रिकाओं-स्टारडस्ट, सोसाइटी, और सेलिब्रिटी की स्थापना की और उनका संपादन किया। वर्तमान में, वह कई अखबारों और पत्रिकाओं के लिए एक स्वतंत्र लेखक और स्तंभकार हैं। शोभा डे, जिन्हें शायद मूक की महारानी या पोर्न की राजकुमारी के रूप में जाना जाता है, भारत की सबसे व्यावसायिक रूप से सफल अंग्रेजी भाषा की लेखिका हैं। यह एक 62 वर्षीय मध्यम वर्ग की भारतीय महिला के लिए एक पागल दावा है, जो खुद को छह बच्चों के लिए पारंपरिक माँ के रूप में वर्णित करती है। हालाँकि दुनिया के सबसे सामाजिक रूढ़िवादी देशों में से एक में से एक भी सेक्स की बिक्री होती है। सभी सम्मेलनों को ध्यान में रखते हुए, सालों तक शोभा डे ने कामुक, चैंकाने वाले सेक्स दृश्य और एक महिला दृष्टिकोण से लिखने की हिम्मत की। एक ऐसे देश में जहां महिलाएं मुश्किल से दो इंच से ज्यादा नंगी होती हैं और शायद ही कभी तलाक के लिए फाइल करती हैं, वह उन महिलाओं के बारे में लिखती हैं जो खुद को पसंद करती हैं, क्योंकि वे बोर हो जाती हैं। शोभा डे एक दर्जन से अधिक किताबों की लेखिका हैं, जिनमें से सभी पत्र (सॉल्ट्री डेज, स्टार्री नाइट्स, स्ट्रेंज ऑब्सेशन) से शुरू होते हैं और ये सभी एक स्तर पर विशेषाधिकार का चित्रण करते हैं जो भारत के अधिकांश 1 बिलियन से अधिक बड़े पैमाने पर प्रभावित लोगों को नहीं कर सकते हैं।

महिला लेखकों की विशेषताएँ

लक्षण वर्णन के मामले में, सभी पांच महिला लेखकों ने कौशल में महारत हासिल की और पुरुषों और महिलाओं के थंबनेल स्केच का वर्णन किया। अमृता ने अपने पिता, अपने दोस्तों और कवियों और लेखकों की अविस्मरणीय तस्वीरें दी हैं, जिनसे वह विदेश में मिलीं। कमला दास ने अपनी महान दादी और अपने प्रसिद्ध चाचा से नपाटा परिवार के सभी सदस्यों के दिलचस्प और बुद्धिमान रेखाचित्र दिए हैं।, रसोइयों और नौकरानियों के लिए नीचे। शोभा डे ने भी अपने पिता की आदतों और जीवन-शैली के बारे में एक मिनट का वर्णन किया है, अपनी माँ के स्पष्ट और स्नेहपूर्ण चरित्र रेखाचित्र, जिन्होंने कुछ साड़ियों के साथ और बिना सादगी के पूरा जीवन बिताया है। उसकी बड़ी बहन वृंदा, जिसे वह अपने सभी रहस्यों को समझा रही थी, उसका पति दिलीप डे, जिसका नाम उसके नाम और चरित्र-चित्रण के बाद भी जारी रहा, उसके छह बच्चों के बिना अधूरा रहेगा। दूसरी ओर पवार ने अपनी माँ, पिता, भाई और मुख्य रूप से अपनी बहन-बहनोई की तस्वीर दी है, जिन्हें उनके घर में सलाम है। शुरुआती अध्यायों में, उनके स्कूल के साथी, उनके पति हरिश्चंद्र, उनकी सास, उनके गांव के लोग और हरि, उनके समुदाय के नए पंडित, शादी और अन्य रस्मों के लिए। पवार ने उन सभी कार्यकर्ताओं को भी श्रद्धांजलि अर्पित की है जिन्होंने डॉ अम्बेडकर के साथ उनके आंदोलन में काम किया था। इस संबंध में, पात्रों के चित्रण में लेखक के रूप में लक्ष्मी बाई तिलक के रूप में उनकी कला में कोई समानता नहीं है। उसका वर्णन इतना तीव्र और गहन है कि हमें पात्रों का बोध जीवंत होता है और संवेदना के साथ मांस और रक्त। उन्होंने अपनी आत्मकथा में, कई काल्पनिक घटनाओं को शामिल किया है जो सीधे उनके जीवन से जुड़ी नहीं हैं। इसी तरह, भाषा भी जाति से जुड़ी होती है और पवार इस बात की मिसाल देते हैं कि कैसे ब्राह्मणवादी भाषा संचार की सुविधा के बजाय ंउवदह दलितों 'के बीच अवरोध पैदा कर सकती है। डवतम उच्च जाति की महिला आम तौर पर अपने पतियों को संबोधित करने के लिए मराठी के अधिक औपचारिक चस औपचारिक 'बहुवचन रूप' आप 'का उपयोग करती है। अपने विवाहित जीवन में ताई का व्यवहार, उनके पति के साथ काफी उचित नहीं था, उनके संचार और ब्राह्मणवादी शब्दों और बोलियों का उपयोग, जिसने पति और पत्नी के बीच एक दूरी बनाई है। जैसा वह लिखती हैं।

उनके लेखन पर लेखक के पर्यावरण का प्रभावः-प्रत्येक महिला लेखक अपने युग की अवधि और समाज-आर्थिक स्थितियों से प्रभावित होती है। प्रत्येक लेखक पुरुष हो सकता है या महिला उसे अपनी अवधि की सामाजिक बुराइयों से दूर नहीं रख सकती है। अमृता प्रीतम के मामले में, उनके पास 1947 में भारत और पाकिस्तान के विभाजन की दर्दनाक कहानियाँ हैं। उनके घर में धार्मिक पृष्ठभूमि है क्योंकि पिता एक उपदेशक हैं और वे चाहती हैं कि वे केवल देशभक्ति और धार्मिक कविताएँ ही लिखें। उनके शुरुआती कविताओं में यह प्रभाव दिखाई देता है। विभाजन के बाद, उन्होंने वारिस शाह की मीठी याद में एक यादगार कविता लिखी है। कविता जुदाई के दर्द को बयान करती है, जो आज भी पंजाब के लोगों द्वारा गाया जाने वाला एक लोकप्रिय पंजाबी गीत है। कवि साहिर के लिए उनका प्यार, श्री प्रीतम सिंह के साथ सोलह साल की उनकी शादी, इमरोज के साथ उनकी जुदाई दोस्ती सभी का उनके उपन्यासों पर सीधा और अप्रत्यक्ष प्रभाव है। इसी तरह, कमला अपने महान नलपत घर और अपने बचपन के दिनों की यादों की पृष्ठभूमि में बयान करती है। दास का संस्मरण प्यार के लिए उसके दर्द को दर्शाता है, जो उसने अपने वैवाहिक जीवन से मांगा था। उन्होंने पारिवारिक प्रभाव के तहत नौ साल की उम्र से अपनी कविता लिखना शुरू कर दिया है। उसने शुद्ध प्रेम की तलाश की है, जिसे उसके लेखन के माध्यम से अशिष्ट और निरर्थक समझा जाता है। वर्तमान

संस्मरण उसके समय-काल और उसके काव्य कौशल को दर्शाता है। उन्होंने स्वतंत्रता-पूर्व युग के साथ-साथ स्वतंत्रता के बाद के युग को भी कवर किया है। वह सिल्वा प्लाथ के प्रभाव में है।

अमृता प्रीतम की शिल्प कला कौशल

अमृता प्रीतम और कमला दास दोनों के अनुभवों के वर्णन के बारे में समान रूप से शक्तिशाली शिल्प लेखक थे। जैसा कि विभाजन के समय उनके पास कई मुस्लिम मित्र थे। विभाजन के समय दोनों आतंकित थे, जब पूरा देश दंगा-फसाद कर रहा था। जैसे-जैसे उनकी रचनात्मक क्षमता उनके आंतरिक विचारों की अभिव्यक्ति बढ़ी, उनकी आत्मकथाएँ उनके मन को प्रकट करती हैं। वे महिला होने पर गर्व महसूस करती हैं और कलात्मकता से चिंतित हैं कि महिलावाद का अर्थ क्या है।

कमला दास की अपनी आत्मकथा के रूप में अपनी खुद की जीवन कहानी का रहस्योद्घाटन अंग्रेजी साहित्य में भारतीय लेखन में नारीवादी लेखन की शैली में अद्वितीय और अभूतपूर्व है। एक महिला द्वारा व्यक्तिगत अनुभवों को पारित करने या विश्वास किए बिना ऐसा प्रयास महिलाओं को महिला अंतरिक्ष की नई दुनिया से बाहर निकालने में मदद करेगा। वास्तव में, कमला दास के कार्यों ने औपनिवेशिक काल के बाद के भारत के संदर्भ में कई नारीवादियों के लेखकों को प्रभावित किया है। महिला अंतरिक्ष की एक नई दुनिया को उकेरने के उनके प्रयासों में परिवार की पदानुक्रम की सबाल्टर्न संरचनाओं को ध्यान में रखते हुए अत्यधिक व्यवहार्यता है, जहां महिलाओं ने अक्सर प्रमुख महत्व की स्थिति पर कब्जा कर लिया है।

अध्ययन के तहत पांच महिला लेखकों ने अपने दृष्टिकोण के कई सामान्य और विपरीत दृष्टिकोण प्रकट किए हैं। आइए, हम इन लेखकों की आलोचना करें। माउंट स्टोरी के मामले में, यह आजादी के बाद की भारत में सबसे ज्यादा बिकने वाली महिला की आत्मकथा है। माय स्टोरी एक क्रोनोलॉजिकली ऑर्डर की गई, एक वास्तविक शैली में लिखी गई रैखिक कथा है। इन वर्षों में, कमला ने माय स्टोरी की उत्पत्ति के कई विरोधाभासी खतों का विरोध किया है। उसने खुद को या तो बहुत ही बोहेमियन के रूप में प्रस्तुत किया है ताकि उसके यौन रोमांच और उसके मानसिक विखंडन की अवधि के बारे में पता चले, या इसके विपरीत, अपने पति के हुक्म का पालन करने वाली विनम्र पत्नी के रूप में, जो स्पष्ट रूप से खुद की तुलना में अधिक उत्सुक था कि वह एक मसालेदार को नकद करने के लिए और उसके जीवन का भारी काल्पनिक वर्णन है।

निष्कर्ष

अमृता प्रीतम के लेखन में, उनके सामाजिक-सांस्कृतिक अनुभवों और व्यक्तिगत संवेदनशील प्रतिक्रियाओं के प्रत्यक्ष दृष्टिकोण हैं, जिसे उन्होंने अपने संस्मरण द रेवेन्यू स्टैम्प में संदर्भित किया है। संस्मरण इस सत्य का गहन अनुभव है। यह उसकी संपूर्ण और रचनात्मक जीवन की चिंतनशील यात्रा है। वह केवल अपनी वृत्ति की देखभाल कर रही थी, सच्चाई बताने के लिए और फिर भी अपनी कल्पनाशीलता को कथा लेखन में एक भेस के रूप में इस्तेमाल करने की कोशिश कर रही थी। उसका ध्यान केवल तथ्यात्मक की तुलना में वैचारिक पर है। वह स्वयं की सच्चाई के लिए प्रतिबद्ध है और उसने अपनी रचनात्मकता के माध्यम से दुनिया को जोड़ने का प्रयास किया है। उन्होंने व्यक्तिगत से सार्वभौमिक दुख तक अपनी दृष्टि विकसित की है। वह खुद को जाति, धर्म, वर्ग, लिंग या राष्ट्र द्वारा उन्मुख किसी भी चयनित या विलक्षण सेट तक सीमित नहीं रखती है। वह संघर्ष के सभी क्षेत्रों से स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ती है, व्यक्तिगत और सामाजिक, जागरूक और अचेतन, भावनात्मक और बौद्धिक, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को कवर करने के लिए अपनी दृष्टि को व्यापक करती है। यह देश में एक सामान्य घटना है कि लेखन करने वाली महिलाएं सामान्य और रचनात्मक हो सकती हैं लेकिन उन्हें उचित क्रेडिट नहीं दिया जाता है जो वास्तव में उनके निजी जीवन में देखा गया है।

संदर्भ

1. प्रसाद, वासुदेव नंदन (2011). आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना. दिल्ली भारती प्रकाशन।
2. बैरागी, लक्ष्मीलाल (1980). हजारी प्रसाद द्विवेदी के कृतित्व का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन. जयपुर: संधी प्रकाशन।
3. रावत, चंद्रभान एवं सिंह, दिलीप (1988). शैलीतत्व सिद्धांत और व्यवहार.दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाऊस।
4. शर्मा, करतारचन्द (2005). कालिदास और शैलीविज्ञान. दिल्ली: ईस्टर्न बुक लिंकर्स।
5. सक्सेना, द्वारिका प्रसाद (1994). भाषाविज्ञान के सिद्धांत और हिंदी भाषा. मेरठ: मीनाक्षी प्रकाशन।
6. सिंह, बहादुर (1984). काव्यभाषा का शैलीवैज्ञानिक विश्लेषण (नरेश मेहता के संदर्भ में). जयपुर विवेक पब्लिशिंग हाउस।

7. आप्टे, वामन शिवराम (1988). संस्कृत-हिंदी कोष. दिल्ली: नाग प्रकाशक।

8. खाँ, मुहम्मद मुस्तफ़ा (1989). उर्दू-हिंदी शब्दकोष लखनऊ: उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान।

9. बैरागी, लक्ष्मी – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के कृतित्व का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन, जयपुर: संघी प्रकाशन-प्रीतम।

Corresponding Author

Kamini Chugh*

Research Scholer